IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

व्यवसायिक शिक्षा का शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों पर नई शिक्षा नीति का प्रभाव

डॉ० जयप्रकाश

एसोसिएट प्रोफेसर एवं एचओडी (शिक्षा) सह उप कुलसचिव (अकादमिक)

रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, बिश्रामपुर, पलामू (झारखंड)

सामान्य सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है यानियह जरूरी नहीं है कि जो लगातार चला आ रहा है। वह समय तथा परिस्थितियों के अनुसार वर्तमान या भविष्य में भी चलता रहे। समय, आवश्यकता व परिस्थितियों के अनुसार चीजें बदलती रहती हैं।अतः हम कह सकते हैं कि जो शिक्षा व्यवस्था चली आ रही है हो सकता है वह भविष्य में मानव जगत की आवश्यकताओं की पूर्ति ना कर सके। इन्ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नई शिक्षा नीति लाई गई है।

प्राचीन काल से ही हर एक समाज और देश ने अपने लोगों को शिक्षित करने के लिए बहुत ही सोच समझकर शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करने के लगातार प्रयास करते रहे हैं। शिक्षा एक लगातारप्रक्रिया होने के कारण निरंतर विकसितहोती रही है तथा उसका प्रसार क्षेत्र निरंतर बढ़ता रहा है।हर एक राष्ट्र अपनी सामाजिक आवश्यकताओं व सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करने व कायम रखने में समय समय पर होने वाली चुनौतियों का सामना करता है व अपने देश के हर एक नागरिकों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए विशिष्ट शिक्षा प्रणाली विकसित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण में प्रारंभिक सोच विचार करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी व तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी के द्वारा अक्टूबर 2015 में पूर्व कैबिनेट सचिव श्री टीएसआर सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में**"नवीन शिक्षा नीति के उद्भव के लिए समिति"**का गठन किया गया इस समिति ने 7 मई 2016 को अपनी आख्या प्रस्तुत की थी।

सुब्रह्मण्यन समिति ने अपने प्रस्ताव में शिक्षा नीति के लिए व्यापक उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा शिक्षा का अधिकार स्कूल परीक्षा सुधार, शिक्षक प्रबंधन, शिक्षक में आईसीटी, व्यवसायिक शिक्षा, प्रशिक्षण, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा विकास व प्रबंधन अधिनियम आदि से संबंधित अनेक सुझाव दिए इस आख्या पर गंभीर विचार विमर्श किया गया इसके बाद जून 2017 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा इसरो के पूर्व निदेशक डॉक्टर के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए ड्राफ्ट समिति**का गठन किया गया।

31 मई 2019 को अपना ड्रॉप मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशांक को सौंप दिया। इस ड्रॉप में नई शिक्षा नीति का ड्राफ्ट तैयार किया गया था इस ड्राफ्ट में शिक्षा प्रणाली उस पर लगभग सभी हितों का ध्यान रखते हुए एवं लगभग 200000 लोगों से सुझाव लेते हुए इसे 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** को पारित कर दिया गया।

पिछली सरकारी शिक्षा नीति में लोगों का किस प्रकार शिक्षा पर अधिक ध्यान था, लोगों को शिक्षित करना ही पुरानी शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य था। जैसे सन 1968 तथा सन् 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराना, माध्यमिक शिक्षा में बच्चों की संख्या को बढ़ाना तथा उच्चतर तकनीकी प्रबंधकीय शिक्षा को विस्तारित करना था। वर्ष 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राचीन तथा सनातन, परंपरा ,सांस्कृतिक दर्शन व मूल्यों की समृद्धि विरासत के आलोक में सभी के लिए समावेशी तथा समान गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने पर जोर रहा है । विश्व में होने वाले परिवर्तन उनकी आवश्यकता उनके ज्ञान तथा समय और

परिस्थितियों के हिसाब से भारत के नौजवानो को भी तैयार करना होगा जिससे वह विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सके।

इन्हीं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे तेजी से बदलाव तथा विश्व स्तर पर रोजगार की परिस्थितियों में आ रहे बदलावों की वजह से भारत के युवाओं का बहुत से क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा। ऐसा करने से ही हमारे युवाओं तथा देश का लगातार विकास होता रहेगा। इसमें कोई संदेह नहीं शिक्षा के माध्यम से ही देश में एक अच्छी प्रतिभाशाली शृंखलातैयार होगी।

व्यवसायिक शिक्षा

व्यवसायिक शिक्षा दो शब्दों से मिलकर बना है पहला है व्यवसाय व दूसरा है शिक्षा। व्यवसाय से आशय है कि जीवन को चलाने के लिए जो कार्य किया जाता है तथा शिक्षा से संबंधित व्यवसाय के प्रशिक्षण के तरीके सीखने से है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यवसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो व्यवसाय को सुचारु रूप से तथा आधुनिकता प्रदान करे।

व्यवसाय का अर्थ वाणिज्य व उद्योग के संपूर्ण जटिल क्षेत्र प्रबंधकीय निर्माण उद्योग तथा सहायक सेवाओं केविस्तृत जाल वितरण बैंकिंग से है। तकनीकी शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा का अंग है। किसी भी समाज की अर्थव्यवस्था उसके व्यवसायिक विकास पर निर्भर करती है, व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी कार्य व्यवसाय से संबंधित तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करती है ताकि वह उस व्यवसाय के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सकें।

“व्यवसाय परक शिक्षा व्यक्तियों को एक विशिष्ट कार्य के योग्य बनाती है जिससे अपनी विशिष्ट सेवाओं के द्वारा समाज में विशिष्ट क्षमता का प्रदर्शन करता है” - **जानड़ीबी**

“व्यापक रूप में व्यवसायिक शिक्षा के अंतर्गत उस सभी प्रकार की शिक्षा को सम्मिलित किया जा सकता है जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त होता है”-

सामाजिक विद्वानों का विश्वकोश

'वैश्विक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसकी आवश्यकता कौशल विकास के लिए होती है और जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने व्यवसाय में विकास करता है और जो उत्पादकता के आधार के लिए लाभकारी है'- **अमेरिकन व्यवसायिक संगठन**

"व्यवसायिक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें स्त्री एवं पुरुष व्यवसायिक भावनाओं के साथ परिश्रम पूर्व और उत्तरदाई सेवा के लिए अपने को योग्य बनाते हैं"-

राधाकृष्णन आयोग

व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को बिना कौशल वाले कार्य से हटाकर बौद्धिक स्तर पर पहुंचाने की क्षमता को बढ़ाती है कोई ऐसा कार्य जो व्यक्ति के स्वयं या समाज के लिए आवश्यक है को दी जाने वाली शिक्षा व्यवसायिक शिक्षा है या विशिष्ट शिक्षा है जो सामान्य शिक्षासे भिन्न है।

शिक्षा और व्यवसाय जीवन केदो पहलू-शिक्षा और व्यवसाय जीविका रूपी रथ के दो पहिए हैं। शिक्षा के बिना जीविकोपार्जन संभव नहीं, व्यवसाय बिना शिक्षा व्यर्थ है। अतः शिक्षा और व्यवसाय एक दूसरे के पूरक हैं। मानवीय विकास के संभल है।राष्ट्रीय विकास के उपकरण हैं। आर्थिक उन्नति के परिचायक हैं प्राचीन युग में शिक्षा ग्रहण करने का उद्देश्य ज्ञानार्जन करना था इसलिए सिद्धांत वाक्य बना "ज्ञान तृतीय मनुजस्थ नेत्रम्(ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है) उस समय शिक्षा केवल धन उपार्जन का माध्यम नहीं थी हां विद्या अर्थकारी होनी चाहिए यह विचार निश्चित ही था जो लोग के छह सुखो में अर्थकारी विद्या को भी एक सुख माना गया था।

कार्य आधारित शिक्षा एवं व्यवसायिक शिक्षा किसी राष्ट्र की आर्थिक ढांचे को मजबूती प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। व्यवसायिक शिक्षा की अवधारणा पर देश में लंबे समय से बहस चल रही है आजादी से पहले और आजादी के बाद देश में शिक्षा पर जितने आयोग और समितियां बनी लगभग सभी ने कार्य आधारित शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा की जरूरत महसूस की है।

शिक्षा आयोग (1964-66)ने कार्यात्मक साक्षरता अनुवर्ती और निरंतर शिक्षा और पूर्ण शिक्षा के कार्यक्रम पर बल दिया 1976-77 में कई प्रदेशों में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में व्यवसायिक

शिक्षा को एक विकल्प के रूप में शुरू की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में व्यवसायिक शिक्षा को एक विस्तृत एवं व्यवस्थित कार्यक्रम के रूप में चलाए जाने पर जोर दिया।

1988 में केंद्रीय व्यवसायिक शिक्षा योजना के अंतर्गत महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और उसे सुचारू रूप से क्रियान्वित करने हेतु संकल्प एवं वित्तीय संसाधन देने का प्रावधान किया गया।

व्यवसायिक शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में लागू किया गया। विभिन्न कारणों से शिक्षा नीति में निर्धारित लक्ष्य को आंशिक रूप में ही प्राप्त किया जा सका, या पढ़ाई में कम दिलचस्पी रखने वाले छात्रों को रोजगार से जोड़ने के बजाए 12वीं पास करने में मददगार बन कर रह गई है । व्यवसायिक शिक्षा को सहज लचीली और जीवन की व्यवस्था से जोड़ने की जरूरत है इसके लिए व्यवसायिक शिक्षा को पूर्ण व्यवस्थित कर प्रशिक्षण पर अधिक बल देना होगा तथा व्यवसायिक शिक्षा के स्थान पर स्वरोजगार अथवा रोजगार आधारित व्यवसाय शिक्षा देनी चाहिए।

इसी प्रकार व्यवसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी कार्य व्यवसाय से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करती है ताकि वह उस व्यवसाय द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सके इस प्रकार हम कह सकते कि**व्यवसायिकशिक्षा वह शिक्षा है जो छात्रों को किसी व्यवसायिक पाठ्यक्रम के लिए तैयार करती है।**

व्यवसायिक शिक्षा का शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों पर प्रभाव

- प्रत्येकविद्यार्थियों कीरोजगारक्षमताओंकोबढ़ानातथाउसकीरूचिकेअनुसारउनकोशिक्षावरोजगारप्रदानकरना
- विद्यार्थियों द्वाराकुशलजनशक्तिकीमांगवपूर्तिकेबीचअंतरकमकरना
- शिक्षाकेसुअवसरोंमेंविभिन्नतालाना
- विद्यार्थियों मेंआत्मविश्वासलाना
- निरुद्देशवरुचिविहीनउच्चशिक्षाप्राप्तविद्यार्थियों कोविकल्पउपलब्धकराना
- अधिकसंख्यामेंस्वरोजगारआधारितपाठ्यक्रमोंकोतैयारकरना
- शिक्षाकेविस्तारकोबढ़ावादेना
- राष्ट्रीयआर्थिकसंरचनाकोमजबूतीप्रदानकरनातथाप्रतिव्यक्तिआयमेंवृद्धिकरना
- राष्ट्रकाविकासकरनातथासामाजिकपरिवर्तनोंकोसहीदिशाप्रदानकरना
- शिक्षाकोउत्पादकताआर्थिकविकासतथाव्यक्तिगतसमृद्धिसेजोड़ना

- बालिकाओंकोआत्मनिर्भरबनानातथालाभदाईरोजगारकेलायकतैयारकरना
- विद्यार्थियों को उच्चशिक्षाकेअनुसरणकोरोकनाउन्हेंउत्पादनकीओरलेजाना

निष्कर्ष:-नई शिक्षा नीति 2020 के व्यवसायिक शिक्षा में विद्यार्थियों, समाज ,शिक्षा जगत तथा सरकारों को अपनी आर्थिक शैक्षिक तथा कर्तव्यों को पूरा किया जा सकता है। जहां विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार उन्हें रोजगार प्राप्त होगा। तो शिक्षा जगत में एक ऐसी शिक्षा प्रक्रिया का अवतरण होगा। जिससे वह कम से कम अपने से एक जैसीविद्यार्थियों की शृंखलातैयार करेगी जो अपनी क्षमताओं तथा योग्यताओं के अनुसार रोजगार प्रदान होगा सरकारों को भी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति होगी तथा समाज को अधिक से अधिक गतिशीलता प्रदान होगी।

संदर्भसूची

1- नई शिक्षा नीति प्रारूप 2020

2- सार्थक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कार्यान्वयन योजना

3- राष्ट्रीय शिक्षा नीति महत्व व चुनौतियां दृष्टि द विजन

4- https://www.google.com/amp/s/www.orfonline.org/hindi/research/putting-vocational-education-centre-stage-in-the-implementation-of-nep-2020/

5- https://pmmodiyojana.in/national-education-polic

6- https://www.shikshaniti.com/2020/08/new-design-of-vocational-education.html?m=1#google_vignette

7- https://www.google.com/amp/s/www.franchiseindia.com/amp/hi/education/vocational-education-and-training.9416

8- https://sstmaster.com/vocational-education-hindi/